परमपिता परमात्मा से आप का क्या सम्बन्ध है ?

परमात्मा हम सभी आत्माओं का रूहानी पिता है | देह के पिता तो सभी के भिन्न भिन्न हो सकते हैं किन्तु आत्मा का पिता तो सभी का एक ही है | आत्मा निराकार ज्योति बिंदु स्वरुप है उसी प्रकार परमात्मा का रूप भी निराकार ज्योतिबिंदु स्वरुप है | एक पिता की संतान होने से हमारा भाई भाई का नाता है | आत्मा के शरीर का नाम रूप बदलता है परन्तु परमात्मा का नाम सदा शिव है, वह सबसे ऊँचा धाम परमधाम में निवास करता है जहाँ से हम

आत्माएं इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर पार्ट बजाने आई हैं | ५००० वर्ष का यह बेहद नाटक जब पूरा होता है, सभी पतित, भ्रष्टाचारी बन जाते हैं तो सुप्रीम डायरेक्टर परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर पुनः सतयुगी दैवी दुनिया की स्थापना करते हैं | कलियुग के इस अज्ञान अन्धाकर रूपी रात्रि में परमात्मा का ब्रह्मा के साधारण मनुष्य तन में दिव्य अवतरण को ही मनुष्यात्मायें महाशिवरात्रि के रूप में मनाते हैं |

१९३६ में परमात्मा का दिव्य अवतरण हो चुका है |

क्या कोई भी मनुष्य आत्मा परमात्मा हो सकता है ?

परमात्मा तो एक निराकार को ही कहा जाता है जो रचियता अथवा क्रिएटर है बाकी सभी तो रचना की श्रेणी में आते हैं | आत्माओं की अनेक वैरायटी हो सकती है जैसे महान आत्मा, देव आत्मा, धर्मात्मा, पुण्य आत्मा, पाप आत्मा इत्यादि किन्तु परमात्मा तो एक ही होता है जिस प्रकार बच्चे अनेक हो सकते हैं किन्तु बाप तो एक ही होता है | कोई भी देहधारी को परमात्मा की संज्ञा नहीं दे सकते | परमात्मा कभी जन्म मरण के चक्र में नहीं आता, कर्म के बंधन में नहीं आता इसलिए पाप-पुण्य से, सुख-दुःख से न्यारा रहता है जबकि हम

आत्माएं जन्म मरण के फेरे में आकर सुख दुःख भोगती हैं | परमात्मा तो सतयुगी स्वर्गीय दुनिया का निर्माण कर हमें सुख की दुनिया में ही भेजता है पर अपने स्वयं के विकर्मों के कारण हम इस संसार को कलियुगी नरक बना देते हैं | इसलिए परमात्मा को ही कल्प के अंत में याने सतयुग-कलियुग के संगम पर सभी मानव आत्माओं की सद्गति करने आना पड़ता है | इसलिए वह ही सच्चा सच्चा सद्गाति दाता सद्गुरु है | कोई भी मनुष्य आत्माओं की सद्गति नहीं कर सकता | परमात्मा न सिर्फ मनुष्यात्माओं को बल्कि अन्य सभी प्राणियों व ५ तत्वों को भी पावन बना कर परिवर्तन करते हैं |

क्या परमात्मा नाम रूप से न्यारा सर्वव्यापी है ?

हर मनुष्य में आत्मा है जो शरीर धारण करने के बाद जीवात्मा कहलाती है | प्रकृति के तत्वों में शक्ति या चेतना हो सकती है पर परमात्मा नहीं | आत्मा और प्रकृति रचना तो परमात्मा इनसे परे रचयिता है, परमधाम में निवास करने वाला महाज्योति है, नाम रूप से न्यारा नहीं | उसकी शक्ति से संसार के प्रत्येक जीव व पदार्थ का पोषण जरुर होता है पर वह इनमें समाया नहीं है| प्रत्येक कण में, पत्थर ठिक्कर में परमात्मा को मान लेना या जानवर कीड़े मकोड़े , पापी नीच में परमात्मा को देखना उसकी सबसे बड़ी ग्लानि है|

सभी में भगवान को मान लेने से तो fatherhood हो जाता है जबकि पिता अनेक कैसे हो सकता है | दूसरी बात, सभी में परमात्मा है तो उनको भी हम जन्म मरण के चक्रे में, पाप-पुण्य वा सुख-दुःख के बंधन में ले आते हैं जो सही नहीं है | सभी में परमात्मा है तो उनके गुण जरुर दिखने चाहिए जो नहीं दिखता | दूसरी ओर, वह सबमें है तो उनको दुःख से निवृत्ति के लिए पुकारना अथवा उनका इस धरा पर अवतरित होना सिद्ध नहीं होता | गीता के "यदा यदा हि धर्मस्य...के कथनानुसार भगवान अति धर्मग्लानि के समय इस धरा पर अपने सर्वोच्च धाम से पधारते हैं तो जरुर उनका मूल निवास स्थान व आने का समय होना चाहिए |

गीता का भगवान वा सच्चा गीता ज्ञान दाता कौन?

सच्चा गीता ज्ञान दाता तो निराकार ज्योतिबिंदु परमपिता परमात्मा शिव ही है जो कलियुग के अंत में याने कलियुग सतयुग के संगम पर सभी मनुष्यात्माओं को ५ विकारों रूपी असुरों पर विजयी बनाने के लिए सहज राजयोग एवं ईश्वरीय ज्ञान के गुप्त शस्त्र द्वारा अहिंसक युद्ध सिखलाते हैं जिसके पश्चात नयी सतयुगी स्वर्गीय दुनिया का आगमन होता है | श्रीकृष्ण सतयुग का पहला प्रिंस हैं जो संगम पर परमात्मा से प्राप्त ज्ञान द्वारा पुरुषार्थ कर इन विकारों पर विजयी बन,

दैवीगुण धारण कर स्वर्गीय राज्य भाग्य का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त करता है | कृष्ण तो जन्म मरण के चक्र में आने वाला १६ कला संपूर्ण, सर्व दैवीगुण संपन्न देवता है जबकि जन्ममरण रहित परमात्मा शिव ही गीता का सच्चा भगवान है | गीता श्रीकृष्ण की माता तो परमात्मा शिव उनके परलौकिक पिता हुए | सर्वशास्त्रमयी शिरोमणि भगवत गीता में परमात्मा शिव के बदले रचना श्रीकृष्ण का नाम डालने से गीता सहित बाकी सभी शास्त्र भी खंडित हो गये जिस कारण सर्वधर्म के एक पिता की भी महिमा चली गयी|

क्या गंगा पतित पावनी है ?

पतित पावन तो एक परमात्मा शिव है जिसे सभी धर्मो के मनुष्य गॉड फादर, अल्लाह, खुदा, जेहोवा, ओंकार इत्यादि अनेक नामों से बुलाते हैं, ख़ास भारत में पुकारते हैं " हे पतित पावन आओ, आकर सद्गति दो | नदियों में स्नान तो मनुष्य जन्मजन्मान्तर से करते आये हैं लेकिन क्या पापों की निवृत्ति हुई है, यदि हुई होती फिर तो पुकारना बंद हो जाता, संसार की अधिक दुर्दशा नहीं हुई होती, घोर कलियुग नहीं आया होता | इससे सिद्ध है कि पानी की गंगा से तन

के मैल तो धुल जायेंगे किन्तु आत्मा के मैल याने पाप तो एक परमात्मा की पावन याद से ही धुलेगा | योग अग्नि व ज्ञान स्नान से ही आत्मा के विकर्म विनाश होकर आत्मा पावन बनेगी तभी तो सभी के दुःख, पीड़ा, कष्ट मिटाने दुःखहर्ता सुखकर्ता परमात्मा अवतरित होकर मन्मनाभव का महामंत्र देते हैं " देह के सभी धर्मो को भूल अपने को अविनाशी आत्मा समझ मुझ निराकार ज्योतिबिंदु परमपिता परमात्मा को याद करो तो तुम्हारे जन्मजन्मान्तर के सभी पाप नष्ट हो जायेंगे और दैवीगुण धारण करने से स्वर्गीय दुनिया का राज्यभाग्य प्राप्त करोगे"

क्या मनुष्यात्मायें ८४ लाख योनियों में जन्म लेती हैं?

सृष्टि चक्र या बेहद के ड्रामा की आयु ही ५००० वर्ष है जिसे कल्प कहा जाता है, जिसमें सतयुग,त्रेतायुग, द्वापर युग, कलियुग प्रत्येक १२५० वर्ष के ४ युग होते हैं और ५वां युग संगमयुग १०० वर्ष का होता है | इस गुप्त पुरुषोत्तम युग में ही परमात्मा अवतरित हो प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नयी सृष्टि की स्थापना का दिव्य कार्य करते हैं, इस समय को ही शिवरात्रि के रूप में मनाया जाता है | पूरे कल्प में मनुष्य आत्मा अधिकतम ८४ जन्म और न्यूनतम १ जन्म लेती है | यह

जन्म भी केवल मनुष्य योनियों में ही होता है | परन्तु यदि लक्ष योनियों में जन्म की बात कहें तो कल्प की आयु ही कई लाखों वर्ष का हो जाये | उस हिसाब से देवी देवता धर्म वालों की जनसंख्या भी कई गुणा हो जानी चाहिए जो कि वर्तमान में दिखाई नहीं देता, लाखो वर्षो का तो हिसाब लगाना भी मुश्किल जो जाए | दूसरी बात, अभी ही जब दुःख व अत्याचार की अति वृद्धि दिखाई दे रही है तो लाखों वर्षों में तो और क्या से क्या हो जाए | इससे लाखों योनियाँ व लाखों वर्ष कल्प की आयु वाली बात सिद्ध नहीं होती |

क्या शिव शंकर एक है या इनमें कोई अंतर है ?

शिव परमात्मा है तो शंकर त्रिदेव वा त्रिमूर्ति में से एक देवता है | शिव का स्वरुप निराकार ज्योतिर्बिंदु है तो शंकर सूक्ष्म देहधारी है | शिव रचियता (creator) है तो शंकर रचना (creation) है | शिव कल्याणकारी है तो शंकर विनाशकारी कर्त्तव्य का प्रतीक है | शिव परमधाम वा ब्रह्मलोक निवासी है तो शंकर सूक्ष्मवतन निवासी है | शिवरात्रि वास्तव में निराकार भोलेनाथ शिव का जन्मदिन है जो कलियुग अंत में अवतरित होकर ज्ञानरत्नों से भक्तों की झोली भरते हैं तथा मुक्ति जीवन मुक्ति का वरसा देते हैं |

क्या आत्मा पाप एवं पुण्य से अलिप्त (निर्लेप) है ?

वास्तव में चैतन्य अविनाशी ऊर्जा तो आत्मा ही है शरीर तो एक विनाशी जड़ साधन है | आत्मा ही कर्तापुरुष है | आत्मा जैसा कर्म करती है उस अनुसार उसे कर्मभोग चुक्तु करने के लिए जन्म लेना पड़ता है | शरीर तो कर्म करने व कर्मफल भोगने के लिये केवल एक माध्यम मात्र है | सुख- दुःख तो वास्तव में आत्मा ही भोगती है कर्म के अनुसार ही आत्मा को पुण्य आत्मा पाप आत्मा का टाइटल मिलता है | इससे यही सिद्ध होता है कि आत्मा कर्मों के प्रभाव से अछुता नहीं हो सकती | अपने किये हुए कर्मों के संस्कार अनुसार अच्छे बुरे कर्म फल उसे अवश्य भोगना पड़ता है चाहे वर्तमान जन्म में या पुनर्जन्म लेकर कर्मो का हिसाब चुक्तु करना ही पड़ता है |